Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

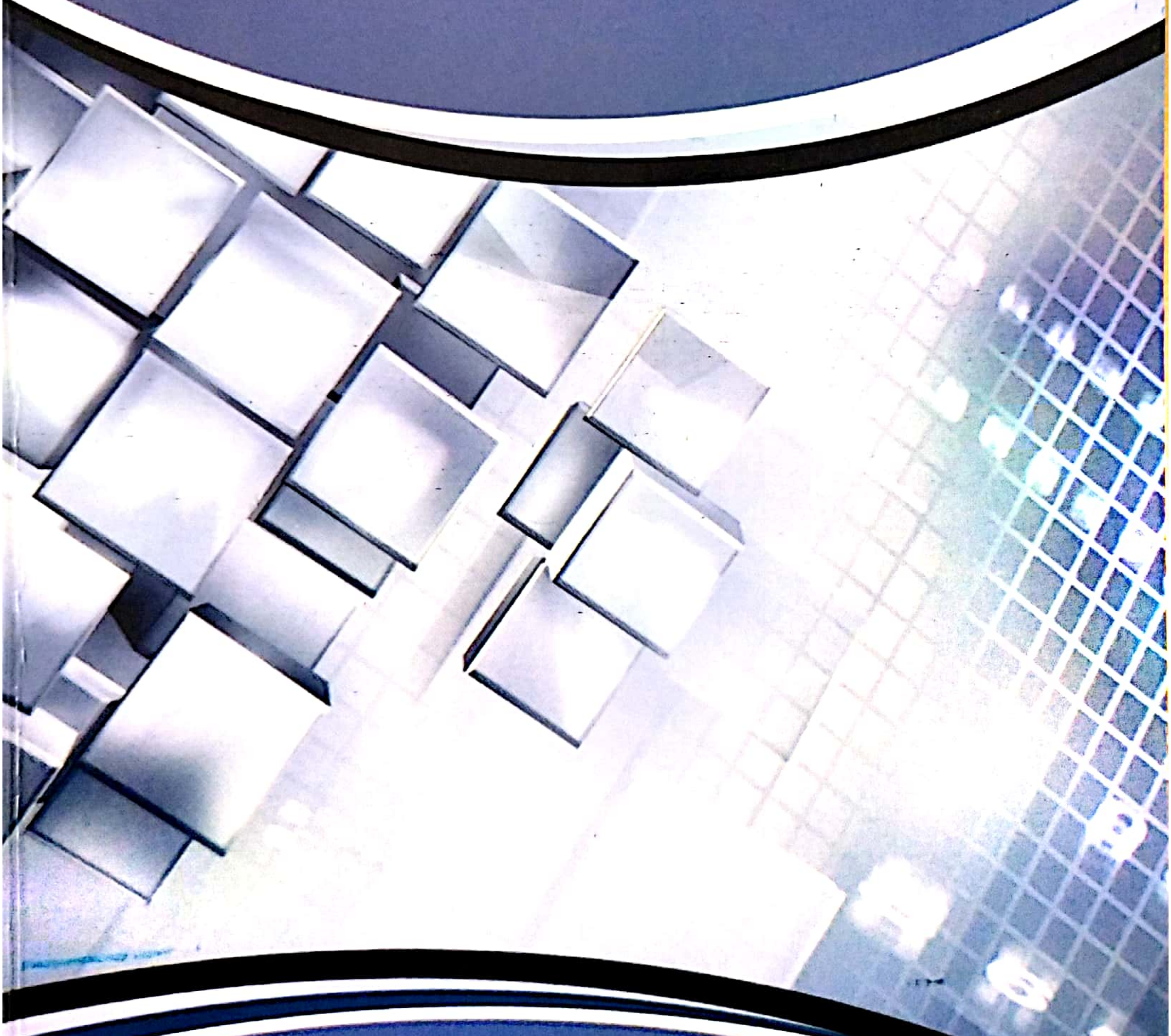

Editors

Dr Samani Sulabh Pragya

Prof. Samani Riju Pragya

Prof. B. L. Jain

Samani Samyaktva Pragya

Scanned by CamScanner

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Scanned by CamScanner

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान — 3-16
   प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त — 17-27
   प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं — 29-42
   प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा — 43-57
   समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina *Āgama*** — 59-72
   Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** — 73-84
   Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप — 85-95
   डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म — 97-103
   डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन — 105-119
   डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन — 121-141
    डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** — 145-154
    Dr Pradyumna Singh Shekhawat

Scanned by CamScanner

प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान

*****

*प्रो. दामोदर शास्त्री

सारांशिका

जैन परम्परा के चौबीसवें व अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने जो उपदेश दिया, उसे गणधरों ने भाषा में निबद्ध किया। उत्तरवर्ती जैन आचार्यों ने जैन तत्त्वज्ञान, दर्शन व अध्यात्म–साधना के प्रचार–प्रसार हेतु मौलिक ग्रन्थों का निर्माण किया। दर्शन क्षेत्र के अतिरिक्त, काव्य, कथा, अलंकार, व्याकरण, कोश, इतिहास, निमित्तशास्त्र (ज्योतिष) आदि के क्षेत्रों में भी जैन व जैनेतर विद्वानों ने अनेकानेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। इस प्रकार जैन साहित्य की एक विशाल परम्परा ने भारतीय साहित्य भण्डार को समृद्ध करने में एक उल्लेखनीय योगदान दिया।

जैन धर्माचार्यों का मुख्य उद्‌देश्य यही था कि जन–जन में जैनधर्म–दर्शन का प्रचार–प्रसार हो। धर्म–साधना के लिए साधक को सक्षम शरीर वाला होना चाहिए, इसीलिए 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (शरीर ही पहला धर्माचरण का साधन है) की उक्ति विद्वानों में चर्चित रही है, इसी दृष्टि से जैन आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में यथाप्रसंग स्वास्थ्य व चिकित्सा से सम्बद्ध उपयोगी सामग्री भी प्रस्तुत की है। प्राचीन जैन साहित्य में, आगमों व उत्तरवर्ती धर्म–ग्रन्थों में स्वास्थ्य, आयुर्वेद व चिकित्सा–विज्ञान की जो सामग्री उपलब्ध होती है, उसे एकत्रित कर सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना इस लेख का उद्‌देश्य है।

सम्बद्ध शब्द : *जैन आयुर्वेद, जैन चिकित्सा विज्ञान, स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तन।*

***प्रोफेसर,** प्राकृत एवं संस्कृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं 341306 (राजस्थान)

Scanned by CamScanner